7/12/2018

(16)

[This question paper contains 2 printed pages.]

DESHBANDHU COLLEGE LIBRARY Kalkaji, New Delhi-19

Your Roll No. ....

IC

Sr. No. of Question Paper : 7455

Unique Paper Code : 12051101

Name of the Paper : हिंदी भाषा और उसकी लिपि का इतिहास

Name of the Course : **B.A. (Hons.) HINDI – CBCS**

Semester : I

Duration : 3 Hours | Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. भारोपीय भाषा परिवार का परिचय दीजिए। (14)

अथवा

हिंदी भाषा के क्रमिक विकास का उल्लेख कीजिए।

2. हिंदी भाषा के क्षेत्र एवं उसकी बोलियों का संक्षिप्त परिचय दीजिए। (14)

अथवा

राष्ट्रभाषा और राजभाषा के अंतर को स्पष्ट करते हुए राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी की स्थिति स्पष्ट कीजिए।

P.T.O.

3. लिपि की परिभाषा देते हुए उसके स्वरूप को स्पष्ट कीजिए। (14)

अथवा

भारत में लिपि के विकास की अवस्थाओं पर प्रकाश डालिए।

4. देवनागरी लिपि के विकास पर अन्य लिपियों के प्रभाव को रेखांकित कीजिए। (14)

अथवा

एक आदर्श लिपि के गुण बताते हुए देवनागरी की विशेषताओं का संक्षिप्त उल्लेख कीजिए।

5. निम्नलिखित में से किन्हीं **तीन** पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए: (6,6,7)

(क) मध्यकाल में हिंदी का विकास ;

(ख) ब्राह्मी लिपि का परिचय ;

(ग) देवनागरी लिपि और कंप्यूटर ;

(घ) हिन्दी का अन्तर्राष्ट्रीय संदर्भ ;

(ङ) हिंदी का अखिल भारतीय स्वरूप ।

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No. 2018

DESHBANDHU COLLEGE LIBRARY, Kalkaji, New Delhi-19

Sr. No. of Question Paper : 7456 IC

Unique Paper Code : 12051102

Name of the Paper : हिंदी कविता (आदिकालीन एवं भक्तिकालीन काव्य)

Name of the Course : B.A. (Hons.) Hindi – CBCS

Semester : I

Duration : 3 Hours

Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. हिंदी साहित्य में अमीर खुसरो के योगदान पर प्रकाश डालिए।

अथवा

विद्यापति 'भक्त कवि हैं या शृंगारी' ? विचार कीजिए। (12)

2. कबीर की भाषा पर प्रकाश डालिए।

अथवा

'मधुमालती' में वर्णित प्रेम व्यंजना पर प्रकाश डालिए। (12)

P.T.O.

3. 'मीरा की उपासना 'माधुर्य' भाव की थी' - इस कथन के आधार पर मीरा की भक्ति की विषेशताएँ लिखिए।

अथवा

सूरदास की भक्ति-भावना पर प्रकाश डालिए। (12)

4. तुलसीदास की समन्वय भावना को स्पष्ट कीजिए।

अथवा

तुलसीदास की काव्य-कला पर विचार कीजिए। (12)

5. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) कबीर कर पकरैं अंगुरी गिनैं, मन धावै चहुं वोर।
जाहि फिरायां हरि मिलै, सो भया काठ कठोर।।
कबीर केसौं कहा बिगाड़िया, जे मूडै सौ बार।
मन कौं काहे न मूंडिए, जामैं बिशै बिकार।।

अथवा

नांक सरूप न बरनै पारौं। तीनिउं भुवन हेरि कै हारौं।
कीर ठोर औ खरग कै धारा। तिलक फूल मैं बरनि न पारा।
उदयागिरि जौ कहौं तौ नाहीं। ससि सूरुज दुइ बाद कराहीं।
निकट न कोउअ संचरै पारा। निसि दिन जियै सो बास अधारा।
केहि दै जोर पटतरौं नासा। ससि सूरज जेहि करहिं बतासा।
नांक, सरूप सोहागिनि केहि लै लावौं भाउ।
जा कहं ससि सूरुज निसि बासर ओसारीं सारहिं बाउ। (8)

(ख) ऐसो को उदार जग माहीं।.
बिनु सेवा जो द्रवै दीनपर राम सरिस कोउ नाहीं।।
जो गति जोग बराग जतन करि नहिं पावत मुनि ग्यानी।
सो गति देत गीध सबरी कहँ प्रभु न बहुत जिय जानी।।
जो संपति दस सीस अरप करि रावन सिव पहँ लीन्हीं।
सो संपदा बिभीशन कहँ अति सकुंच-सहित हरि दीन्हीं।।
तुलसिदास सब भाँति सकल सुख जो चाहसि मन मेरो।
तौ भजु राम, काम सब पूरन करैं कृपानिधि तेरो।।

अथवा

धूत कहौ, अवधूत कहौ, राजपूतु कहौ, जोलहा कहौ कोऊ।
काहूकी बेटीसों बेटा न ब्याहब, काहूकी जाति बिगार न सोऊ।
तुलसी सरनाम गुलामु है रामको, जाको रुचौ सो कहै कछु ओऊ।
माँगि कै खैबो, मसीतको सोइबो, लैबोको एकु न दैबेको दोऊ।।

(7)

6. निम्नलिखित पद्यांशों में दिए गए निर्देश के अनुसार किन्हीं दो का रचना कौशल विश्लेषित कीजिए : (6×2=12)

(क) हेरी म्हा तो दरद दिवाणाँ म्हाराँ दरद न जाण्याँ कोय।।टेक।।
घायल रो गत घायल जाण्याँ, हिबड़ो अगण सँजोय।
जौहर की गत जौहरी जाण्यां, क्या जाण्याँ जिण खोय।
दरद को मारयां दर दर डोल्याँ वैद मिल्या णा कोय।
मीराँ री प्रभु पीर मिटाँगा जब वैद साँवरो होय।। (प्रेम की पीर)

अथवा

अति मलीन वृशभानु-कुमारी
हरि स्रम-जल भीज्यौ उन-अंचलए तिहिँ लालच न धुवावति सारी ।।
अध मुख रहति अनत नहिँ चितवति, ज्यौं गथ हारे थकित जुवारी ।
छूटे चिकुर बदन कुम्हिलाने, ज्यौं नलिनी हिमकर की मारी ।।
हरि सँदेस सुनि सहज मृतक भइ, इक बिरहिनि, दूजे अलि जारी ।
सूरदास कैसैं करि जीवैं ब्रज बनिता बिन स्याम दुखारी ।।

(भाव सौंदर्य)

(ख) काहे ही नलनी तूं कुम्हिलांनीं,
तेरे ही नालि सरोवर पांनीं ।।टेक।।
जल मैं उतपति जल मैं बास, जल मैं नलनीं तोर निवास ।
ना तलि तपति न ऊपरी आगि, तोर हेतु कहु कासनि लागि ।
कहै कबीर जे उदिक समांन, ते नहीं मूए हमारे जान ।।

(प्रतीकात्मकता)

अथवा

चकवा चकवी दो जने उनको मारे न कोय ।
ईह मारे करतार कै रैन बिछोही होय ।।

सेज सूनी देख के रोऊं दिन-रैन ।
पिया पिया कहती मैं पल भर सुख न चौन ।। (रहस्य भावना